बुनावट और बनावट के आईने में 'कैनवास से बाहर झाँकती लड़की'

डॉ० संगीता वर्मा,

कमला नेहरू कॉलेज,
दिल्ली विश्वविद्यालय,
नई दिल्ली

सार

हरीश अरोड़ा जनसरोकारों के कवि हैं। वर्तमान समय की अनुगूँज उनकी कविता में सहज ही व्याप्त है। उनका कविता संग्रह 'कैनवास से झाँकती लड़की' जहां मानवीय मूल्यों की प्रतिस्थापना के लिए प्रतिबद्ध है वहीं आधुनिक जीवन की विसंगतियों और विडंबनाओं की भी पड़ताल करता है। जीवन में विघटित होते रिश्तों के बीच पारिवारिक और सामाजिक सम्बन्धों की सार्थकता पर गंभीर विमर्श करता है यह कविता संग्रह। कवि का सफर अँधेरे में ही समाप्त न होकर उसके कदम उजाले की ओर भी बढ़े हैं। इन कविताओं ने समकालीन युगबोध को यथार्थ के धरातल पर प्रस्तुत किया है।

बीज शब्द : *संचेतना , शाश्वत, तुणीर, नॉस्टेल्जिया, चाप ध्वनि, दक्षिणायन, निर्निमेषी।*

मोम भी मिट्टी के बिना बिखर जाती है,
उसकी पहचान बस मिट्टी से ही है।

हरीश अरोड़ा का कविता के क्षेत्र में जनसरोकार, ज्ञान का अथाह भंडार, ज्ञान की पराकाष्ठा और क्रांतिधर्मी आचरण समाज में कुछ नया रचने को आतुर है। हरीश अरोड़ा का 'कैनवास से बाहर झांकती लड़की'कविता संग्रह मानवीय मूल्यों को प्रतिस्थापित करने हेतु प्रतिबद्ध है। अनंत संचेतना, जिजीविषा और अंतहीन जिज्ञासा का प्रतीक यह कविता संग्रह वर्तमान चिंतन धारा का सहज स्रोत स्वीकारा जा सकता है। यह संग्रह हिंदी के प्रमुख वादों के साथ कदम से कदम मिलाकर ही नहीं चलता अपितु काव्य सृजन के क्षेत्र में मील का पत्थर भी स्थापित करता है। कवि ने अपने आसपास की घट रही घटनाओं को, मानवीय मूल्यों को और चेतना को कई दृष्टिकोण से देखने का प्रयास किया है।

हरीश अरोड़ा सामाजिक दायरों को समेटने वाले कवि हैं। उनकी कविताएं विशेष लक्ष्य को लेकर चलती हैं। लक्ष्य है– आदर्शोन्मुखी समाज की प्रतिस्थापना करना। इन कविताओं में कवि के विविध मनोदशाओं को लेकर लिखे गए विविध संवेदनात्मक एहसास हैं और ये एहसास अपने भीतर कभी उहापोह के रूप में दिखाई देते हैं, कभी असंतुष्टि के रूप में, पर कवि का उद्देश्य केवल बदलते मूल्यों को व्यक्त करना ही नहीं है अपितु कविता को एक नजरिया बनाना है अपनी स्वायत्तता को पहचानने का। अपने आसपास के नजरिये के संबंध में हम कितना सजग रह पाते हैं, इसका बोध कवि ने अपनी कई कविताओं में कराया है। आचार्य शुक्ल ने भी 'कविता क्या है' निबंध में लिखा है दृ "कविता ही मनुष्य के स्वार्थ संबंधों के संकुचित मंडल से ऊपर उठाकर लोक सामान्य की भाव भूमि पर ले जाती है। जहाँ जगत की नाना गतियों के मार्मिक स्वरुप का

साक्षात्कार और शुद्ध अनुभूतियों का संचार होता है, इस भूमि पर पहुंचे हुए मनुष्य को कुछ काल के लिए अपना पता नहीं रहता। वह अपनी सत्ता को लोक सत्ता में लीन किए रहता है। उसकी अनुभूति सबकी अनुभूति होती है या हो सकती है। इस अनुभूति दृयोग के हमारे अभ्यास से हमारे मनोविकार का परिष्कार तथा शेष सृष्टि के साथ हमारे रागात्मक संबंध की रक्षा और निर्वाह होता है।"[1] उन्होंने मानव मन की गहराई को कई स्तरों पर बारीकी से जानने की कोशिश की है।

वर्तमान समय विडम्बनाओं से परिपूर्ण है। इसका प्रभाव संवेदनशील ह्रदय पर होना स्वाभाविक ही है तभी कवि अपने आसपास के समाज से बेरुखी नहीं कर पाते और स्पष्ट वक्ता के रूप में में उनकी भूमिका दिखाई देती है। बहुमुखी प्रतिभा से संपन्न कवि हरीश अरोड़ा हिंदी साहित्य के सच्चे सेवक हैं। उनका अनुभव, ज्ञान का अथाह भंडार नवीन मानवीय मूल्यों के प्रतिस्थापना के लिए आचरण श्लाघनीय है। 'कैनवास से बाहर झांकती लड़की' कविता संग्रह उनकी देश व समाज की विविध क्षेत्रों में पैनी दृ ष्टि का परिचायक है। जीवन के विविध रंगों को समेटे यह कविता संग्रह संवेदना के विशाल जगत का निर्माण करता है। यह कविता संग्रह काव्य संसार के विभिन्न घटकों के साथ कदम से कदम मिलाकर ही नहीं चलता अपितु वर्तमान समय में काव्यजगत किस प्रकार अपनी मार्मिकता को नहीं भूल पाया है इस ओर भी संकेत करता है। यह कविता कविता संग्रह एक रंग दृबिरंगे फूलों से सजे गुलदस्ते की तरह कहा जा सकता है जिसमें विभिन्न भाव दृसंवेदनाओं के पुष्प सजे हुए हैं। बुनावट के आईने में इस कविता संग्रह की कई विशेषताएँ दिखाई देती हैं।

विभिन्न भाव व संवेदनाओं के सागर रूपी इस कविता संग्रह में 'उगता हुआ सूरज' कविता में कवि का आशावादी दृष्टिकोण संचरित होता है। सूर्योदय के समय केवल सूर्य का उदय ही नहीं होता अपितु उसके साथ पूरी दुनिया के सपने भी जागते हैं। बहती हुई रोशनी को... मुस्कुराती गलियों ...को कहने का अभिप्राय यही है कि शहरी जीवन को प्राकृतिक सौंदर्य के दर्शन दुर्लभ ही होते हैं किन्तु यह प्राकृतिक चेतना और वातावरण जीवन को कैसे प्रभावित करता है इसका संकेत प्रभावी रूप में किया गया है। कवि की मनश्चेतना की गहराई इसमें दिखाई देती है –

सूरज रोज ढलता है
पर मैं उसे ढलते हुए कभी नहीं देखता
मैं देखता हूँ तो बस उसे जाते हुए
फिर लौटकर आने के लिए।[2]

मुक्त वातावरण में जीने की इच्छा रखने वाली 'चिड़िया' कविता संपूर्ण शहरी जीवन पर कटाक्ष है। चिड़िया के माध्यम से कवि अरोड़ा जी गांव छोड़कर शहर में बस गए लोगों पर व्यंग्य करते हैं कि प्राकृतिक संपदा,स्थान को छोड़कर लोग शहर के पिंजरेनुमा इमारत में घुटने पर मजबूर हैं।

चिड़िया सचमुच पागल है
जो छोड़ आई है
गाँव का खंडहर
शहर की पिंजरेनुमा घुटती इमारत के लिए।[3]

बड़े नगरों की ही ओर संकेत करती हुई 'बड़े नगर' कविता यह संकेत करती है कि कि सुबह से लेकर शाम तक वक्त के अंतराल में अंतर आ जाता है। जीवन की आपाधापी में शाम को लौटते हुए घर भी अजनबी सा लगता है जबकि प्रातरू वह हंसकर ही मानो विदा करता है। जिन्दगी की ऊहापोह से कोई भी सांसारिक व्यक्ति बचा नहीं है। 'जिंदगी' कविता यह संकेत करती है कि शब्दहीनता और गरजते शब्द दोनों ही शाश्वत सत्ता के समक्ष अर्थहीन हैं। परिवर्तन सृष्टि का

नियम है। शब्दों का वजनदार होना ना होना कोई मायने नहीं रखता क्योंकि जिंदगी को एक दिन शाश्वत सत्ता के समक्ष पराजित होना ही है। बहुत ही खूबसूरती से कवि ने भावनाओं को पौराणिक पात्र अर्जुन के माध्यम से कविता की बुनावट की है–

शब्द अर्जुन के तुणीर में हैं जो
बोलते नहीं गरजते हैं।
फिर भी पराजित हो जाती है,
जिन्दगी।[4]

इस कविता संग्रह के शीर्षक पर आधारित मुख्य कविता 'कैनवास से बाहर झांकती लड़की' कविता की रचना कवि ने विस्तृत फलक पर की है। स्त्री का जीवन सदियों से एक ही राह पर चला आ रहा है। घर की दीवार पर टंगे कैनवास पर खूबसूरत रंगों से कोई चित्र में एक बहुत सुंदर रंगों से बनाया गया है जिसमें उजाला भरता सूरज है,लहराते हुए पेड़ हैं और एक छोटी सी नदी है। इस सहज प्राकृतिक वातावरण के नदी के किनारे ही एक लड़की है जिसकी एकांत निगाहें कैनवास से बाहर झांक रही है। वह प्रतीकात्मक लड़की आतुर है संसार की वर्जनाओं को तोड़ डालने के लिए, किंतु सच तो यह है कि स्त्री जाति के लिए कुछ भी नहीं बदला है। इस कविता के माध्यम से पूरी स्त्री जाति पर संकेत किया गया है कि भले ही कितने ही युग बीत जाएं...कितनी सभ्यताएं चली जाए किंतु स्त्री की स्थिति सुधरने वाली नहीं है। कैनवास से बाहर की स्थितियां बदलती रहीं किन्तु स्त्री की दशा और दिशा में वर्षों से टंगे इस कैनवास की भांति कुछ भी नहीं बदला है। कैनवास के न तो रंग बदले, न नदी, न सूरज की उजली धूप, न ही लहराते हुए पेड़ और ना ही बदली कैनवास से बाहर झांकती लड़की की एकांत निगाहें। इसी प्रकार 'लड़कियों के पंख नहीं होते' कविता लड़कियों के अदम्य साहस व क्षमता का परिचय देती है। दुनिया की निगाह में लड़कियां सदैव कमजोर मानी जाती हैं किन्तु कवि की दृष्टि में लड़कियां कमजोर बिल्कुल भी नहीं हैं।

इस कविता संग्रह में कवि का नॉस्टेल्जिया भी दिखाई देता है। कवि ने इस कविता में अपने बीते जीवन की छोटी–छोटी यादों को बहुत ही खूबसूरती के साथ संवेदनाओं के धागे में शब्दों के मोतियों को पिरो दिया है। 'पिता' इस सन्दर्भ में उल्लेखनीय कविता है। पिता की जीवन में बहुत महत्वपूर्ण भूमिका होती है। वे जीवन की धुरी होते हैं। इसी को रेखांकित करते हुए कवि लिखते हैं कि बचपन में सिर्फ मैं मिट्टी के लौंदे की तरह था। पिता ने पता दुनिया रूपी चाक पर चढ़ाकर तराशा और एक सटीक व्यक्तित्व को दुनिया के सामने रखा। कवि का सुनहरा भविष्य उनके पिता की ही देन है। किन्तु कवि ने सदैव यह माना है कि पिता उनके भीतर ही कहीं हैं जो हर पल उनका भविष्य संवारते रहते हैं। इसी कड़ी में 'पिता ओर बरगद' कविता भी उल्लेखनीय है जिस प्रकार बरगद आंधी तूफान में भी उखड़ता नहीं और अपनी जड़ों को छोड़ता नहीं उसी प्रकार उनके पिता ने भी जीवन संघर्ष में कभी भी अपने आपको उखड़ने नहीं दिया और संघर्षों की भावभूमि पर अपने स्वत्व का निर्माण किया।

इसी कड़ी में 'मिट्टी और मां' कविता में मां की ओर संकेत बहुत ही भावपूर्ण भाषा में किया गया है। मां हर सुख दुख में मुस्कुराती है। वह अपनों के साथ दूसरों के दुख दर्द को भी अनुभव करने की क्षमता रखती है। केवल मां ही जीवन में ऐसी भूमिका निभाती हैं जो कोई नहीं निभा सकता। कवि ने अपनी मां के संदर्भ में लिखा है कि मां रोज ही मेरे दुखों को बुहार लेती थीं किंतु एक दिन ऐसा भी आया कि मेरे दुखों को हटाते–हटाते वह मिट्टी की धूल मेरी मां को भी अपने साथ ले गई। इस छोटी सी कविता ने विशाल मार्मिक संवेदना का संसार रच दिया है।

इस कविता संग्रह की कविताओं में आधुनिक समाज और प्रकृति दोनों को जोड़कर देखा गया है। उनकी कविताओं में प्रकृति का एक अलग अंदाज दिखाई पड़ता है। यहां ग्रामीण प्रकृति के चित्रों के साथ– साथ शहरी प्रकृति की भी छटा दिखाई देती है। प्रकृति से गहरा जुड़ाव 'गांव बहुत सुंदर होते हैं' कविता में दिखाई देता है। इस कविता में शहर की व्यस्त जिंदगी से ऊबा हुआ मन गांव के सहज सौंदर्य की ओर आकृष्ट होता है। गाँव के मकान भले ही कच्चे हों पर वे रिश्तों की डोर को बखूबी जोड़े रखना जानते हैं।

गाँव ही तो है
जो सच में मुस्कुराते हैं,
लहलहाते हैं खेतों की तरह
उड़ते हैं बादलों की तरह
संभालते हैं रिश्तों को।[5]

कवि ने ग्रामीण प्रकृति को शहर के विरोध में खड़ा तो नहीं किया है वरन प्रकृति और रिश्तों की सहज डोर को वे इतने गतिशील और सजीव ढंग से प्रस्तुत करते हैं कि पाठक खुद–ब–खुद प्रकृति में रमने के लिए बाध्य हो जाता है। पर्यावरणीय संवेदनात्मक पहलु भी इस कविता संग्रह में दिखाई देते हैं। कवि कविता के शब्दों को ना पढ़ने की सलाह देते हैं। कविता के अंतिम शब्द अत्यंत मार्मिक हैं–

अगर पढ़ना ही है
तो पढ़ना
किताब के
खाली पन्नों को।
जो
कह रहे हैं
कटे हुए पेड़ की
आत्मकथा।[6]

खाली पन्नों की किताब भी वृक्ष की मार्मिक संवेदना को व्यक्त कर सकती है, यह इस कविता से प्रकृति के प्रति कवि की निष्ठा को दर्शाता है। तथा कवि ने विरोधाभास को जिस प्रकार व्यक्त किया है उससे उनके मानवीय पहलू का तो पता चलता ही है साथ ही मानवेतर जगत के प्रति करुणा का भाव भी प्रकट होता है। प्रकृति पर आधारित नन्हीं कनी,आँगन भर धूप,उगता हुआ सूरज, आकाश पर टंगा चाँद,चिड़िया सचदृसच बताना आदि कविताएँ भी प्रकृति ओर मानव जीवन के गहरे रिश्ते को व्याख्यायित करती हैं। 'नन्हीं कनी' कविता में कवि ने नन्हीं ओस की बूँद का स्वयं से एक रिश्ता सा जोड़ दिया है।

हरीश अरोड़ा ने जीवन को समग्रता में देखने का प्रयास किया है। उनका व्यक्तित्व जनसाधारण के साथ ताल से ताल मिलकर ही नहीं चलता बल्कि वह सामाजिक स्थितियों से टकराकर ओर दायरे में रहकर अपने जीवन का अर्थ खोजता है। यहाँ समाज का स्थान व्यक्ति विशेष से ऊपर माना गया है। 'देव नहीं होते' कविता सामाजिक वर्जनाओं, परम्पराओं पर प्रहार करती है कि दौड़ती सड़कों के किनारे असंख्य देवी देवताओं की मूर्तियाँ खड़ी रहती हैं। वे रंगों की खूबसूरत बाजीगरी से मेहनत से तैयार की जाती हैं किन्तु कुछ समय बाद ही कूड़े के ढेर में तब्दील हो जाती हैं। इसी तथ्य को व्यंजित करती 'मिट्टी का देवता' कविता भी इसी के समानार्थी कही जा सकती है कि इंसान सिर्फ एक खिलौने की भांति है जिसे मिट्टी के देवता ने निर्मित किया है और एक दिन उसी मिट्टी के देवता में समा जाता है। जीवन की क्षणभंगुरता को इन दोनों कविताओं में देखा जा सकता है।

भारत विभाजन की ओर संकेत करती 'बंटवारा' कविता मार्मिक संवेदना को व्यक्त करती है। बंटवारे के समय केवल घर ही नहीं जले थे, देश का विभाजन ही नहीं हुआ था बल्कि साथ ही

सदियों पुराने रिश्ते, संबंध भी पल भर में ही स्वाहा हो गए थे।

राख हो गई
कच्ची मिट्टी के
मकान में रखी
संबंधों की चादर।[7]

निरंतर जीवन से जुड़े रहने की आकांक्षा उन्हें और उनके सृजन को जीवन के प्रमुख धारा का अंग बनाती है। यह कविता केवल अवचेतन का संघर्ष ही नहीं है उसमें जनजीवन की संघर्ष शक्ति के विभिन्न अभिप्राय निहित हैं। राजनीति और कविता में दोनों में गहरी विभाजक रेखा है। प्रसिद्ध आलोचक नामवर सिंह का मानना है कि "हमने यह मान लिया है कि कविता ओर राजनीति के बीच बुनियादी विभाजन है। समस्या यह नहीं है कि दोनों छोर कभी मिल नहीं सकते बल्कि यह है कि यदि वह मिल सकते हैं तो बड़ी कीमत पर। राजनीति की अस्पष्ट वक्तृतावादी भाषा के साथ कविता की जटिलता, तनाव और यथातथ्यता का कोई मेल नहीं है।"[8] यह कथन बिलकुल उचित है कि कविता और राजनीति का कोई मेल नहीं है किन्तु कविता ने अपने आरम्भ से ही अपने कोमल आँचल में राजनीति की कठोरता को संभाला है, वह अतुलनीय है। इस संग्रह में भी राजनीति को कतिपय कविताओं में स्थान दिया गया है क्योंकि कवि ने सदैव जनवाणी को महत्वपूर्ण माना है। इसी स्वर को आगे बढ़ाती कविता 'वैचारिकता का राग' भी इसे मनोदशा को आधुनिकता के दायरे में वर्तमान राजनीतिक विसंगतियों पर चोट करती है कि –

सत्ता की चाप ध्वनि की गूंज के साथ
और
और जल उठता है रात
राष्ट्र का उन्नत वृक्ष।[9]

कवि मुक्तिबोध पर आधारित 'तुम समझ ही नहीं पाए' कविता उनकी प्रसिद्ध कृति 'अंधेरे में' पर आधारित है। कवि का मानना है कि 'अंधेरे में' कविता सिर्फ राजनीतिक अंधेरों की कहानी ही नहीं कहती बल्कि उसमें तो मुक्तिबोध ने रोशनी को दिखाने की बात कही है। मुक्तिबोध का व्यक्ति आधुनिक संघर्षशीलता का पर्याय है। उनका मानव 'समूह मानव' है, वह केवल अकेले मुक्ति की कामना नहीं करता बल्कि व्यक्ति का समाज हित ध्यान रखते हुए समाज से टकराना ही उनके साहित्य का आधुनिक होना सिद्ध करता है, अतरू यह कविता भी इसी तथ्य की पुष्टि करती है। रचना प्रक्रिया से गुजर कर ही व्यक्ति जीवन चेतना का जीवन ज्ञान अर्जित करता है। यही इसका व्यावहारिक पहलु भी है। उसके पुराने जीवन मूल्य नवीन मूल्यों में ढलते जाते हैं। जीवन रूपी ज्ञान को अर्जित करने की प्रक्रिया व्यक्ति द्वारा अपने परिवेश मात्र को प्रत्यक्ष द्रष्टा के रूप में देखने से प्राप्त होती है। जीवन का प्रत्यक्ष ज्ञान प्राप्त करने हेतु अवलोकन से प्राप्त वस्तु तथ्य को जीवन अनुभूति का अंग बनाना आवश्यक होता है। कवि ने अनुभूत सत्य को आधार बनाकर सामाजिक स्थितियों के संदर्भ में अपने अपने मत व्यक्त किए हैं। राजनीतिक पहलु को समेटे 'धार' कविता भी इसे तथ्य की पुष्टि करती है।

तलवारें
जब जंग खाती हैं
तो सत्ताओं की मूंठ भी
नहीं रहती
किसी काम की...[10]

बनावट की दृष्टि से इस काव्य संग्रह में कवि ने नवीन अभिव्यंजना पद्धति का प्रयोग किया है। कवि का 'कविता लिखो' कविता में मानना है कि "जिन्दगी, रोने से बेहतर है, कविता लिखो, अटपटी ...अनगढ़ ...अबूझ ...बस लिख दो ...वह

अपना अर्थ, खुद कह देगी, वर्ना, पाठक तो हैं ही, अपने दृअपने अर्थ गढ़ने को।"[11] कहने का अभिप्राय यह है कि काव्य संग्रह की बनावट अनायास रूप से की गई है। भाषा प्रयोग में नवीनता है।भाषा के विविध उपकरणों प्रतीक, बिंब, अलंकार, छंदों में शास्त्रीय परम्परा का निर्वाह न करके भाव सम्प्रेषण पर बल दिया गया है। इस तथ्य की पुष्टि कविता संग्रह की इन पंक्तियों से भी हो जाती है – "मेरे घर के बाहर कभी तुलसी का पौधा नहीं हुआ करता था ....लेकिन तुलसी की शुचिता और पावित्र्य मेरे घर के भीतर सदैव रहे ...उन संबंधों में जिन्हें जीकर मैं बन सका एक कवि। मैं कविता कब लिखता हूँ ? कविता तो मैं लिखता ही नहीं, बल्कि मैं तो कविता को जीता हूँ। जैसे चिड़िया जीती है आकाश को।"[12]

हरीश अरोड़ा के इस काव्य संग्रह की बनावट और बुनावट दोनों अपने ह्रदय की संवेदना को इस बैचेनी और विह्वलता से प्रस्तुत करते हैं कि पाठक प्रभावित हुए बिना नहीं रहता। बिम्ब और प्रतीक जीवन के विभिन्न पक्षों को उभरने में पूरी तरह से सफल रहे हैं। कविताओं के बिंबों में संवेदना की गहराई और सामाजिक सरोकार दिखाई देते हैं। कवि की दृष्टि दरअसल बिंबों के माध्यम से मानवीय स्थितियों को संप्रेषित करना रहा है–

और मेरे घर

स्टडी टेबल के सामने

दीवार पर टंगा कलैंडर

कांप रहा है।[13]

कवि ने शब्दों का भी बहुआयामी प्रयोग किया है। 'शुचि', 'तुणीर', 'श्वेतात्मा', 'रक्ताभ', 'दक्षिणायन', 'रक्तिम', 'निर्निमेषी' जैसे संस्कृत शब्द भी दिखाई देते हैं तो उर्दू की छटा भी बिखरी हुई है। देशज शब्द 'छिछली', 'लौंदा', 'घरौंदा', 'आंवे' को अपनाने से परहेज नहीं किया गया है। सावन के आवारा बादल, मिट्टी का देवता, राष्ट्र का उन्नत वृक्ष, सत्ता की चाप ध्वनि, सूखे खेतों की निगाहों को, मिट्टी रौंद रही है, समाजवादी विचार का रक्त, लाल गालों वाले लोग, सत्ता की मूंठे, रंगों की खूबसूरत बाजीगरी से सजी, मेहनत की धूप में मृगमरीचिकाओं के धरातल आदि पंक्तियों के प्रयोग ने कविताओं को आन्तरिक दृष्टि से सशक्तता प्रदान की है। 'तुम्हें पता हैध् हर चेहरे के पीछेध् एक मरघट होता है/ जहाँ/ जिन्दगी का सच/ आदमी के भीतर/ खड़ा होक/ हर पल/रोता है'[14] आदि पंक्तियाँ जिए हुए यथार्थ की भाषा में परिणति है।

इस कविता संग्रह में अलंकार केवल साधन बनकर प्रयुक्त हुए हैं साध्य बनकर नहीं। ये जीवन के विभिन्न पक्षों को उभरने में पूरी तरह से सफल रहे हैं। इस कविता संग्रह में कवि ने अँधेरे से मणियाँ ढूंढने का कार्य तो किया ही है किन्तु कवि का सफर अँधेरे में ही समाप्त न होकर उनके कदम उजाले की ओर भी बढ़े हैं। इस संघर्षशीलता के कारण ही यह कविता संग्रह आधुनिक साहित्य के नवीन आयामों को छूने की शक्ति पा सका है। आधुनिकता के विभिन्न पहलु जैसे नैतिकता, बौद्धिकता, धर्मनिरपेक्षता, वैज्ञानिक चिंतन, प्रकृति, मानवीय रिश्ते को देखने की भरपूर कोशिश की गई है। यह संग्रह सीधे दृसपाट शब्दों में हमें मानवीय मूल्यों का बोध कराता है। मानव जीवन की गहराई से जुड़ी जो हमारी पहचान है, हमारी संस्कृति के भिन्न रूप हैं, उन अर्थों से इसका जुड़ाव दिखाई देता है। इन कविताओं ने विसंगतियों पर प्रहार भी किया है, सामाजिक दायरे के भीतर उन अमानवीय शक्तियों की पहचान भी कराई है और विरोध करने के लिए प्रेरित भी किया है। इन कविताओं ने समकालीन युगबोध को यथार्थ के धरातल पर प्रस्तुत किया है। कुल मिलकर कहा जा सकता है कि 'कैनवास से बाहर झांकती लड़की' कविता संग्रह बुनावट और बनावट की दृष्टि से अग्रणी है

और साथ ही सांस्कृतिक आयाम और सम्प्रेषण में भी श्रेष्ठ है।

सन्दर्भ

1. रामचंद्र शुक्ल, 'चिंतामणि–1', प्रकाशन संस्थान, नई दिल्ली, 2007, पृष्ठ 107
2. हरीश अरोड़ा, 'उगता हुआ सूरज', कैनवास से बाहर झांकती लड़की, के बी एस प्रकाशन, दिल्ली–94, पृष्ठ 17
3. हरीश अरोड़ा, 'चिड़िया', वही, पृष्ठ 81
4. हरीश अरोड़ा, 'जिंदगी', वही, पृष्ठ 34
5. हरीश अरोड़ा, 'गाँव बहुत सुंदर होते हैं', वही, पृष्ठ 35
6. हरीश अरोड़ा, 'आत्मकथा', वही, पृष्ठ 74
7. हरीश अरोड़ा, 'बंटवारा', वही, पृष्ठ 87
8. नामवर सिंह, 'संचयिता', सं० नंदकिशोर नवल, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, 2003, पृष्ठ 212
9. हरीश अरोड़ा, 'वैचारिकता का राग', कैनवास से बाहर झांकती लड़की, पृष्ठ 91
10. हरीश अरोड़ा, 'धार', वही, पृष्ठ 85
11. हरीश अरोड़ा, 'कविता लिखो', वही, पृष्ठ 100
12. हरीश अरोड़ा, 'चंद शब्द अपनी और से.....', वही, पृष्ठ 7
13. हरीश अरोड़ा, 'खामोश सर्द रात', वही, पृष्ठ 32–33
14. हरीश अरोड़ा, 'जिंदगी का सच, वही, पृष्ठ 102